ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-9* December-2020
Anthology : The Research

सैन्धव सभ्यता का एक धार्मिक कृत्य : वृषभ मेध

A Religious Act of The Sandhav Civilization: Taurus Merit

Paper Submission: 00/00/2020, Date of Acceptance: 00/00/2020, Date of Publication: 00/00/2020

ध्यानेन्द्र नारायण दूबे
सहयुक्त आचार्य,
प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग,
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

सैंधव वैदिक दो विपरीत स्वभाव वालीं सस्कृतियां हैं एक नगरीय तो दूसरी ग्रामीण। वृषभ का महत्व दोनों ही सभ्यताओं में समानरुप से दिखलाई पड़ता है एक ओर वह कृषि के लिए साधन है तो व्यापार के लिये वाहक ।सैंधव सभ्यता के खिलौने और मुहरों पर बहुतायत संख्या में वृषभ का मिलना इस बात का संकेत करता है कि वह लोक आस्था से जुड़ा पशु था ।वैदिक ग्रन्थ इस बात के साक्षी है कि वृषभ कृषि के साथ ही धन तथा बल दोनों का प्रतीक था रोचक बात यह है कि त्रिशीर्ष परम्परा जिसका उल्लेख श्रृग्वेद ,तैत्रिरीय आरण्यक ,शतपथ ब्राह्मण ,कोषितकी ब्राह्मण में मिलता है ।वह ईरानी धर्म ग्रन्थ अवेस्ता में भी थिज्र यान एवं क्वष –उर्षा केथ्र, अतै आनो आख्यानों में भी मिलता है ।अवेस्ता की त्रिशीर्ष परम्परा बेबिलोन आनातोलिया के माध्यम से हित्ति देव मण्डल में स्थान पाया जिसकी पुष्टि पुरातात्विक साक्ष्य भी करते हैं। इन संस्कृतियों में वृषभ का धार्मिक आभिचारिक कृत्यों से सम्बन्ध था। वृषभ पूजन व बलि के विधान के साक्ष्य मिलते हैं। ऐसी ही परम्परा सैंधव सभ्यता में थी।

The Sandhava Vedic cultures of two opposite nature are one urban and the other rural. The importance of Taurus is shown equally in both civilizations and on the one hand it is the means for agriculture and the carrier for trade. The abundance of Taurus on the toys and seals of the Santhava civilization indicates that it is from the folk faith. The animal was connected. The Vedic text testifies that Taurus was a symbol of both wealth and power, along with agriculture. The scripture is found in the Avesta also in the Thejara and Ksavsh-Ursha Kethra, Ata Aono. The Trishya tradition of Avesta found a place in the Hittite Deva Mandal through Babylon Anatolia, which is also confirmed by archaeological evidence. Taurus was associated with religious ideological acts in these cultures. Evidence of legislation of Taurus worship and sacrifice is found. This tradition was in the Sandhav civilization.

मुख्य शब्द : त्रिशीर्ष, त्रिमुख, क्वष, त्वष्टा, विश्वोस्तीर्ण ।
Trishirish, trimukh, kshvash, twashtha, Vishwastorin.

प्रस्तावना

वैदिक ऋचाओं में वृषभ के भयंकर एवं बलिष्ठ रुप के साथ उसकी शब्दायमान् प्रतिमा भी गरिमामयी है। उसके हुंकार से समस्त जीवों में एक प्रकार का भय उपस्थित हो जाता है। संभवतः वृषभ की भयानक हुंकार (गर्जना) तदनुसार उसके भयावह आकृति से भयभीत ऋषियों ने ऋग्वेदीय ऋचाओं में स्तुत्य देवों की प्रशस्तवाणी को शब्दायमान वृषभ को सादृश्यरुप प्रदान किया। यही कारण है वृषभ की गर्जना देवी गर्जना प्रतीत हुई।

इस प्रकार त्रिदेव कल्पना, जिसे स्रष्टा, पालक एवं विनाशक तीनों क्रियाओं का एकरुप माना जा सकता है, भारतवर्ष में अति प्राचीन सिद्ध होती हैं इस संदर्भ में मार्शल लिखते हैं– "शिव सर्वोतम यौगिक राज है, इसीलिये वह महात्मा और महायोगी भी कहलाता है। वह अलौकिक तपस्वी और शरीर पोषक है। – शैवमत के समान योगक्रिया का आविर्भाव भी भारत की आदिवासी अनार्य जातियों में हुआ– शिव केवल योगिराज ही नहीं अपितु पशुपति भी है, और उसकी इसी स्वाभाविक विलक्षणता के कारण ही सैन्धव मुद्रा पर उसे चार पशु घेरे हुये हैं– उत्तरकाल में सिन्धु सभ्यता के इस त्रिमुख देवता के सिर पर का सींग त्रिशुल के आकार में बदल गयें और इस रुप में शिव का विशेष लक्षण बन

गये– इसलिये सैन्धव मुद्रा पर एक ऐसा देवता बना है, जिसका शरीर रचना उसे ऐतिहासिक शिव का पूर्वरुप घोषित करने को हमें बाध्य करती है। [1]

अध्ययन का उद्देश्य

वैदिक ग्रन्थों में वृषभ का उल्लेख और सैंधव मुहरों पर वृषभ के अंकन के बीच एक सहज सम्बन्ध दिखलाई पड़ता है सामान्यतया इसकी उपेक्षा की गई है। वैदिक ग्रन्थों में वर्णित त्रिशीर्ष परम्परा का अंकन सैंधव मुहर पर त्रिशीर्ष देव के साथ समीकृत किया जाना चाहिए। इसे स्वीकार करने के फलस्वरूप अनेक भारतीय ऐतिहासिक सांस्कृतिक अवधारणायें जो अनेक भ्रान्तियों को समेटे हुए है वह निर्मूल हो जायेगी जो भारतीय इतिहास की परम्परा को सैंधव संस्कृति की विशेषता के विभिन्न पहलूओं का उदघाटन कर सकेगी।

त्रिशीर्ष–पशुपति परंपरा

सैन्धव सभ्यता का त्रिशीर्ष पशुपति जिसे मार्शल ने ऐतिहासिक शिव पशुपति का आदि रुप कहा है एक परंपरा विशेष का परिचायक हैं ऋग्वेदीय एवं सैन्धव संस्कृतियों में त्रिशीर्ष परम्परा, एक संभावित सामंजस्य उपस्थापित करती है। "त्रिशीर्ष" शब्द के ऋग्वेदीय उल्लेख से एवं सैन्धव त्रिशीर्ष के पुरातात्विक साक्ष्य से इसमें सन्देह नही रह जाता कि सैन्धव संस्कृति भारतवर्ष की प्राचीनतम नगर संस्कृति है यद्यपि यह मन्तव्यधारणा अद्यावधि अनिर्णीत हैं ऋग्वेद के दशम मण्डल की एक ऋचा में कहा गया है कि 'त्रित आप्त्य ने अपने पैतृक अस्त्रों के बल पर और इन्द्र के द्वारा प्रोत्साहित किये जाने पर त्वष्टा के त्रिशीर्ष पुत्र (विश्वरुप) से युद्ध किया और उसका वध किया एवं गौओं को उन्मुक्त किया।' [2]

इसके आगे के ऋचा में पुनः उल्लेख है कि 'त्वष्टा का पुत्र विश्वरुप एक त्रिशीर्ष दानव है इसे त्रित और इन्द्र मार देते हैं और उसकी गौओं को खेल लातें हैं। [3]

प्रो० विजय बहादुर राव की कृति उत्तर वैदिक समाज एवं संस्कृति में डा० विश्वम्भर शरण पाठक ने ऋग्वेदीय प्रमाणों (त्रिशीर्ष षडक्ष दास ऋ० 10/99/6) के अतिरिक्त त्वष्ट्रा परंपरा को, तैत्तिरीय संहिता (2/5/1/1) शतपथ ब्राह्मण, महाभारत (उद्योग, सेनोद्योग पर्व अ० 9) एवं तैत्तिरीय संहिता के वेदार्थ प्रकाश भाष्य में उद्घृत कौषीतकी ब्राह्मण के अंश के द्वारा परिपुष्ट कर त्रिशीर्ष दास –दस्यु–यति–तपस्वी तथा विश्वानुग और विश्वोस्तीर्ण श्रेष्ठतम देव को सैन्धव मुद्रा पर उत्खचित योगिराज पशुपति से साम्य किया है। [4]

त्रिशीर्ष परंपरा के संदर्भ में सांस्कृतिक ऐक्य के हेतु डा० पाठक ने भारतीय साक्ष्यों के साथ ही भारतेतर साक्ष्यों को प्रस्तुत किया है, जिससे थ्रिजयान (त्रिशीर्ष) एवं क्ष्वष–उर्षा (षडाक्ष) दहायक (दाय) के थ्र अैत आनो (आख्य पुत्र) द्वारा माने जाने की अवेस्ता परंपरा का ज्ञान होता है। [5] वैदिक 'आप्त्य' और 'त्रित' अवेस्ता के 'आख्य' और थ्रजेत आनों से समीकृत है। [6] ईरानी धर्म ग्रन्थ अवेस्ता की इस परंपरा के साथ त्रिशीर्ष विश्वरुप थ्रिजफन अजी दहाक और त्रिमुख सैन्धव पशुपति का विचारसूत्र बब्रोह (बाबेल– बेबिलोन) पहुचकर अनातोलिया के माध्यम से हित्ती देवमण्डल में स्थान लेता है। [7]

जैसा कि हम देख चुके हैं पुरातत्व से ज्ञात हित्ती देव वृषभवाह तैशुव और देवी सिंहवाहिनी हेपत भारतीय शिव–पशुपति और सिंहवाहिनी दुर्गा से अनेकविध समीकृत हैं इस प्रकार पुरातात्विक सैन्धव एवं हित्ती परंपराओं के साथ तथा ऋग्वेदीय एवं अवेस्ता की त्रिशीर्ष परंपरा में पर्याप्त साम्य दिखलाई पड़ता है। इन परंपराओं के सामंजस्य हेतु डा० पाठक के विचार सर्वथा समीचीन प्रतीत होते है। इसमें सन्देह स्वल्प है कि इन दो सैन्धव एवं हित्ती पुरातत्वों के साथ और ऋग्वेदीय तथा अवेस्ता की उपर्युक्त परंपराओं में अनेकविध साम्य है किन्तु इन ऐतिहासिक तत्वों की व्याख्या विषयक एवं इस प्रकार के साक्ष्यों के बलाबल का निर्णय करने के लिये अभी कोई मीमांसा शास्त्र उपलब्ध नहीं और न इस प्रकार के हेतु और हेत्वाभासों में अन्तर बल–लानेवाला कोई तर्क शास्त्र ही।[8]

इसके अतिरिक्त मोहन जोदड़ो की मोहर सं० 5 और 8 पर वेदिका को वृष– पूजा के उत्सव समारोह के अवसर पर प्रदर्शित किया गया है। सैन्धव सभ्यता से प्राप्त एक मुहर पर उत्सव में चार मनुष्य भाग ले रहे हैं छाप के दायें और बायें किनारे वाले मनुष्यों के हाथों में वेदिकायें है मनुष्य अपने हाथ में एक दण्ड उठाये हुये है और इस दण्ड के शिखर पर दो सींगों वाला बैल खड़ा हैं चौथे मनुष्य के हाथ में भी दण्ड है, परन्तु इसकी चोटी पर से माला अथवा ध्वजा जैसी कोई वस्तु लटक रही है। सिन्धु मुद्राओं में इस प्रकार का अभिप्राय केवल इन दो मुद्राओं पर ही मिलता हैं इस प्रकार के दृश्य को देखकर सहजतया अनुमान लगाया जा सकता है कि उक्त स्थिति में वृषभ बलिवेदिका पर खड़ा किया गया हैं संभवतः इस प्रकार के कर्मकाण्डों के माध्यम से तत्कालीन लोगों को आत्मविश्रान्ति होती रही होगी। वृषभ की पूजा के अनन्तर उसका वध किया जाता रहा होगा जो बलिदाता की मनोवांछनाओं की पूर्ति में सहायक सिद्ध होता रहा होगा। इस तरह वृषभ मेध सैन्धव सभ्यता का एक पवित्र धार्मिक कृत्य था इसमें सन्देह नहीं।

निष्कर्ष

सैंधव सभ्यता के दो मुद्राओं पर बनी वेदिका पर वृषभ का अंकन इस बात की पुष्टि करता है कि वृषभ का आभिचारिक महत्व था ।सैंधव लोग मनोकामना की पूर्ति हेतु वृषभ की पूजा के बाद उसकी बलि देते रहे होगें जैसा उदाहरण हित्ति सभ्यता से प्राप्त है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *मार्शल, सरजान, मोहनजोदारो एण्ड इण्डस सिविलाइजेशन, वैल्यूम 1–3, लन्दन,1931,वाराणसी,1973, 3–पृ० 52–55।*
2. *"स पित्र्याण्यायुधानि विद्वनिन्द्रेधित आप्त्यो अभ्ययुध्यतृ।*
   त्रिशीषीण सप्तरश्मिं जधन्वान्त्वाष्ट्रस्य चिन्निः ससृजे त्रितो गाः ।। ऋ०।0.8.8, विस्तार के लिए द्रष्टव्य, डा० सूर्यकान्त, वैदिक देवशास्त्र पृ० 161 ।
3. *ऋ०10.8.9, एवं वैदिक देवशास्त्र, पृ० 417 ।*
4. *राव, प्रो० विजय बहादुर, उत्तर वैदिक समाज और संस्कृति, वाराणसी 1966, प्रवेशक, पृ० 5–7 एवं आगे।*

वीसो पुत्रों अङ्यानोइश् वीसो सूरयो थ्रेअेत आनो/13 अजीं वहाक क्ष्वम अषीं थ्रिकमरथम् अशआजइधम् द अेवीं द्रुजम् /14

5. *–वही, प्रवेशक पृ० 7 में उद्घृत अवेस्ता के गोश–द्रवास्य–यश्त के मंत्र।*
6. *वही, प्रवेशक में प्रो० विश्वम्भर शरण पाठक के विचार, द्वितीय संस्करण।*
7. *वही।*
8. *वही, पृ० 8 एवं आगे।*